

राजस्थान के ग्रामीण पर्यटन का भौगोलिक अध्ययन

भरत कुमार चौहान

अतिथि सहायक आचार्य
भूगोल, राजकीय महाविद्यालय रेवदर, सिरोही

सारांश

राजस्थान अपनी भौगोलिक विविधता, समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं तथा ऐतिहासिक धरोहरों के कारण पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य है। मरुस्थलीय परिदृश्य, लोकगीत-लोकनृत्य, प्राचीन दुर्ग, हवेलियाँ, मंदिर, हस्तशिल्प तथा ग्रामीण जीवन शैली यहाँ आने वाले पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करते हैं। राज्य के ग्रामीण क्षेत्र सदियों से लोक संस्कृति, पारंपरिक कला एवं हस्तकला के केंद्र रहे हैं, जो ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए अनुकूल आधार प्रदान करते हैं। ग्रामीण पर्यटन का मुख्य उद्देश्य पर्यटन गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना, स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ाना तथा सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना है। कृषि आय में कमी, ग्रामीण बेरोजगारी तथा शहरों की ओर बढ़ते पलायन की समस्या को ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। इसके साथ ही यह स्थानीय कलाकारों, कारीगरों तथा पारंपरिक ज्ञान को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। ग्रामीण पर्यटन के प्रभावी विकास हेतु स्थानीय समुदाय में जागरूकता, आधारभूत सुविधाओं का विस्तार, सड़क, बिजली, संचार एवं इंटरनेट जैसी सेवाओं की उपलब्धता तथा प्रशिक्षित स्थानीय पर्यटन मार्गदर्शकों का विकास आवश्यक है। साथ ही, ग्रामीण पर्यटन के प्रचार-प्रसार के लिए प्रभावी विपणन रणनीति, सरकारी योजनाओं का समुचित क्रियान्वयन, गैर-सरकारी संगठनों की भागीदारी तथा सार्वजनिक-निजी सहभागिता (PPP) मॉडल को बढ़ावा देना भी महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान के ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं, विकास के आयामों, प्रबंधन संबंधी उपायों एवं प्रमुख चुनौतियों का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है।

संकेत शब्द: सांस्कृतिक विरासत, स्थानीय अर्थव्यवस्था, विपणन रणनीति, पर्यटन प्रबंधन, मरुस्थलीय पर्यटन, होमस्टे पर्यटन, ग्रामीण आजीविका, पर्यटन अवसंरचना

प्रस्तावना

पर्यटन ऐसी गतिविधि है जिसमें व्यक्ति मनोरंजन, ज्ञानार्जन तथा सांस्कृतिक अनुभव प्राप्त करने के उद्देश्य से विभिन्न स्थानों की यात्रा करता है। यह केवल अवकाश बिताने का माध्यम ही नहीं बल्कि सामाजिक-आर्थिक विकास का भी महत्वपूर्ण साधन है। पर्यटन से परिवहन, आवास, आतिथ्य, मार्गदर्शन, हस्तशिल्प तथा कुटीर उद्योगों जैसे अनेक सेवा क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं। राजस्थान में पर्यटन के महत्व को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1989 में इसे उद्योग का दर्जा प्रदान किया गया। वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर पर्यटन की प्रवृत्तियों में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। पर्यटक अब भीड़-भाड़ वाले शहरी क्षेत्रों के बजाय शांत एवं प्राकृतिक वातावरण वाले ग्रामीण क्षेत्रों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। वे स्थानीय जीवन शैली, पारंपरिक कृषि पद्धतियों, लोक संस्कृति तथा क्षेत्रीय खान-पान का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं। इसी कारण ग्रामीण पर्यटन का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। भारत सरकार के अनुसार ऐसा पर्यटन जो ग्रामीण जीवन, संस्कृति, कला और प्राकृतिक परिवेश को प्रदर्शित करते हुए स्थानीय समुदाय को आर्थिक एवं सामाजिक लाभ पहुँचाए, ग्रामीण पर्यटन की श्रेणी में आता है। इसी दिशा में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। भारत की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जिससे ग्रामीण पर्यटन के विकास की व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं। राजस्थान में भी

बड़ी आबादी गांवों में रहती है, जहाँ सांस्कृतिक विविधता और प्राकृतिक आकर्षण ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करते हैं।

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन के विविध आयाम

- 1. खेती-किसानी जीवन अनुभव पर्यटन :-** इस प्रकार के पर्यटन में आगंतुक ग्रामीण कृषि व्यवस्था को नजदीक से समझते हैं। वे खेतों में होने वाली गतिविधियों जैसे बुवाई, सिंचाई, कटाई, पशुपालन तथा जैविक उत्पादों के उपयोग का अनुभव करते हैं। साथ ही ग्रामीण भोजन और पारंपरिक खेती से जुड़े जीवन को भी प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं।
- 2. लोकजीवन एवं परंपरा आधारित पर्यटन :-** इस श्रेणी में पर्यटक ग्रामीण समाज की परंपराओं, त्योहारों, लोकभाषा, लोकसंगीत और लोकनृत्यों से परिचित होते हैं। गांवों में आयोजित मेलों, पारंपरिक आयोजनों और सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी से उन्हें स्थानीय संस्कृति का जीवंत अनुभव प्राप्त होता है।
- 3. ग्रामीण प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटन :-** गांवों का स्वच्छ वातावरण, खुले मैदान, वनस्पति, जल स्रोत और शांत जीवन पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। लोग मानसिक शांति, स्वास्थ्य लाभ तथा प्रकृति के समीप समय बिताने के उद्देश्य से ऐसे स्थानों का चयन करते हैं।
- 4. रोमांचक ग्रामीण गतिविधि पर्यटन :-** ग्रामीण क्षेत्रों की भौगोलिक विशेषताएं साहसिक गतिविधियों के लिए अनुकूल होती हैं। पर्यटक ऊँट सफारी, ट्रेकिंग, साइकिलिंग, पैराग्लाइडिंग, ट्री हाउस प्रवास तथा अन्य रोमांचक अनुभवों का आनंद लेने के लिए गांवों की ओर आकर्षित होते हैं।
- 5. जनजातीय जीवन शैली पर्यटन :-** इस पर्यटन के अंतर्गत पर्यटक विभिन्न जनजातीय समुदायों की सामाजिक संरचना, रहन-सहन, परंपरागत ज्ञान और सांस्कृतिक मान्यताओं को समझते हैं। यह प्रकार विविध सांस्कृतिक पहचान को जानने का अवसर प्रदान करता है।
- 6. ग्रामीण कला एवं शिल्प पर्यटन :-** ग्रामीण क्षेत्रों में निर्मित पारंपरिक वस्त्र, मिट्टी शिल्प, लकड़ी की कलाकृतियां, चित्रकारी और हस्तनिर्मित उत्पाद पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इन उत्पादों की खरीद से स्थानीय कारीगरों को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।
- 7. पर्यावरण अनुकूल सामुदायिक पर्यटन :-** इस प्रकार के पर्यटन में स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी होती है और पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता दी जाती है। प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग तथा स्थानीय परंपराओं के संरक्षण के साथ पर्यटन गतिविधियों का संचालन किया जाता है।
- 8. ग्रामीण आस्था केंद्र पर्यटन :-** ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित लोकदेवताओं के मंदिर, धार्मिक स्थल और पारंपरिक आस्था से जुड़े स्थान पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। धार्मिक मेलों और अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए लोग गांवों की यात्रा करते हैं।

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की विकास संभावनाएँ

राजस्थान पर्यटन की दृष्टि से देश ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विशेष पहचान रखता है। राज्य की भौगोलिक विविधता, मरुस्थलीय परिदृश्य, ऐतिहासिक दुर्ग, हवेलियाँ, लोक परंपराएँ, मेले-त्योहार, धार्मिक स्थल तथा पारंपरिक हस्तशिल्प पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इन विशेषताओं के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन विकास की व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं। ग्रामीण जीवन शैली, पारंपरिक भोजन, लोक संगीत, नृत्य और हस्तनिर्मित उत्पादों का प्रत्यक्ष अनुभव पर्यटकों को विशिष्ट आकर्षण प्रदान करता है। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन, आय में वृद्धि तथा सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा मिलता है।

ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत कई गांवों की पहचान की गई है, जहाँ प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संसाधनों के आधार पर पर्यटन गतिविधियाँ विकसित की जा सकती हैं। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित कुछ प्रमुख संभावनाशील ग्रामीण स्थल निम्न प्रकार से हैं—

1. **चित्रित हवेलियों वाला मंडावा क्षेत्र** :- शेखावटी अंचल में स्थित यह क्षेत्र अपनी भित्ति चित्रों से सजी हवेलियों, प्राचीन स्थापत्य शैली तथा सांस्कृतिक वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। यहां के पुराने भवन, गलियाँ और पारंपरिक बाजार ग्रामीण पर्यटन के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं।
2. **विश्रोई संस्कृति अनुभव क्षेत्र (जोधपुर के निकट)** :- इस क्षेत्र में पर्यटकों को पारंपरिक ग्रामीण जीवन, वन्यजीव संरक्षण की परंपरा तथा स्थानीय आतिथ्य का अनुभव प्राप्त होता है। आगंतुक यहाँ पशुपालन, पारंपरिक भोजन, लोकनृत्य तथा मिट्टी शिल्प जैसी गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।
3. **खुरी मरुस्थलीय पर्यटन गांव** :- जैसलमेर के समीप स्थित यह स्थान रेत के टीलों, ऊँट सफारी तथा लोक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए जाना जाता है। पर्यटक यहाँ रेगिस्तानी वातावरण में रात्रि प्रवास कर ग्रामीण संस्कृति का अनुभव प्राप्त करते हैं।
4. **सामोद ग्रामीण विरासत क्षेत्र** :- जयपुर के आसपास स्थित यह गांव किले, हवेलियों और पारंपरिक हस्तकला के लिए प्रसिद्ध है। यहां ऊँट सफारी, स्थानीय शिल्प और ग्रामीण परिवेश पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
5. **बिजयपुर ग्रामीण हेरिटेज पर्यटन क्षेत्र** :- चित्तौड़गढ़ के समीप स्थित यह गांव अपने ऐतिहासिक किले और प्राकृतिक वातावरण के कारण महत्वपूर्ण है। यहां पक्षी अवलोकन, घुड़सवारी तथा ग्रामीण परिवेश आधारित गतिविधियों की संभावनाएँ हैं।
6. **खीमसर मरुस्थलीय ग्रामीण क्षेत्र** :- जोधपुर के निकट स्थित यह स्थान ऐतिहासिक किले और शांत रेगिस्तानी वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। पर्यटक यहां ग्रामीण जीवन के साथ मरुस्थलीय प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव करते हैं।
7. **कुचामन सांस्कृतिक ग्रामीण क्षेत्र** :- नागौर जिले में स्थित यह क्षेत्र किले, हवेलियों, लोक देवस्थानों और ऊँट सफारी जैसी गतिविधियों के कारण ग्रामीण पर्यटन के लिए उपयुक्त है।
8. **खिचन पक्षी पर्यटन गांव** :- जोधपुर जिले का यह गांव प्रवासी पक्षियों, विशेष रूप से कुरजा (डेमोइसल क्रेन) के आगमन के कारण प्रसिद्ध है। सर्दियों के मौसम में यहाँ पक्षी अवलोकन पर्यटन की विशेष संभावनाएँ रहती हैं। इसके अतिरिक्त शेखावटी क्षेत्र के ग्रामीण मंदिर, पारंपरिक वस्त्र, हस्तनिर्मित आभूषण तथा स्थानीय भोजन भी पर्यटन आकर्षण का केंद्र हैं। हाड़ौती क्षेत्र में जलाशय, धार्मिक स्थल तथा प्राकृतिक दृश्य ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। जनजातीय क्षेत्रों में सांस्कृतिक विविधता, मेले, धार्मिक आस्था तथा प्राकृतिक संसाधनों के कारण सामुदायिक और इको-टूरिज्म की व्यापक संभावनाएँ हैं।
आभानेरी क्षेत्र की प्राचीन बावड़ियाँ, अलसीसर की हवेलियाँ, लोटवाड़ा का प्राकृतिक परिवेश, भूरी पहाड़ी का जनजातीय जीवन तथा नीमराना का ऐतिहासिक किला जैसे स्थल भी ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

ग्रामीण पर्यटन के विकास में अनेक बाधाएँ भी सामने आती हैं। सबसे प्रमुख समस्या जागरूकता की कमी है, जिसके कारण स्थानीय लोग अपने क्षेत्र की पर्यटन क्षमता को पहचान नहीं पाते। इसके अतिरिक्त आधारभूत सुविधाओं का अभाव भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। कई गांवों में सड़क, स्वच्छ आवास, पेयजल, स्वास्थ्य सेवाएँ तथा संचार सुविधाएँ पर्याप्त नहीं हैं।

पर्यटकों के लिए प्रशिक्षित स्थानीय मार्गदर्शकों की कमी भी पर्यटन विकास को प्रभावित करती है। ग्रामीण युवाओं को आतिथ्य, संवाद कौशल और पर्यटन प्रबंधन का प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। इसके साथ ही प्रभावी प्रचार-प्रसार, डिजिटल माध्यमों का उपयोग, स्थानीय उत्पादों का विपणन तथा सार्वजनिक-निजी सहभागिता को बढ़ावा देना आवश्यक है।

यदि इन चुनौतियों का समाधान योजनाबद्ध तरीके से किया जाए तो राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्र पर्यटन विकास के महत्वपूर्ण केंद्र बन सकते हैं और इससे स्थानीय समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार संभव है।

ग्रामीण पर्यटन के प्रचार-प्रसार एवं विपणन के प्रमुख उपाय

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने तथा पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए सुनियोजित विपणन रणनीतियों की आवश्यकता होती है। प्रभावी प्रचार-प्रसार के माध्यम से ग्रामीण स्थलों की पहचान बढ़ाई जा सकती है और अधिक पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। इस उद्देश्य से निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं—

- 1. सूचना पुस्तिकाओं एवं गाइड सामग्री का प्रकाशन :-** ग्रामीण पर्यटन स्थलों से संबंधित विवरण, मानचित्र, सांस्कृतिक विशेषताएँ तथा यात्रा मार्गों को दर्शाने वाली पुस्तिकाएँ तैयार कर पर्यटकों तक पहुँचाई जाती हैं।
- 2. समाचार पत्रों एवं डिजिटल मीडिया में प्रचार अभियान :-** प्रिंट मीडिया, टेलीविजन, रेडियो तथा ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से ग्रामीण पर्यटन स्थलों का विज्ञापन कर व्यापक स्तर पर जानकारी उपलब्ध कराई जाती है।
- 3. पर्यटन मेलों और व्यावसायिक आयोजनों में भागीदारी :-** राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित पर्यटन मेले, प्रदर्शनी, सम्मेलन तथा व्यापारिक मंचों में भाग लेकर राज्य के ग्रामीण पर्यटन उत्पादों का प्रदर्शन किया जाता है।
- 4. दृश्य-श्रव्य माध्यमों का उपयोग :-** डॉक्यूमेंट्री फिल्म, फोटो गैलरी, प्रचार वीडियो तथा डिजिटल प्रस्तुति के माध्यम से ग्रामीण जीवन, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य को आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- 5. पत्रिकाओं एवं यात्रा प्रकाशनों में प्रचार :-** देश-विदेश की प्रतिष्ठित यात्रा पत्रिकाओं, समाचार पत्रों तथा पर्यटन विशेषांक में लेख एवं विज्ञापन प्रकाशित कर ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जाता है।
- 6. सांस्कृतिक उत्सवों एवं स्थानीय आयोजनों का विकास :-** ग्रामीण मेलों, लोक उत्सवों, हस्तशिल्प प्रदर्शनियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर पर्यटकों को स्थानीय परंपराओं से जोड़ने का प्रयास किया जाता है।
- 7. मीडिया प्रतिनिधियों एवं पर्यटन विशेषज्ञों के परिचयात्मक भ्रमण :-** लेखकों, छायाकारों, पत्रकारों और पर्यटन उद्योग से जुड़े व्यक्तियों को ग्रामीण स्थलों का भ्रमण करवाकर उनके माध्यम से व्यापक प्रचार सुनिश्चित किया जाता है।
- 8. आधिकारिक पर्यटन पोर्टल का संचालन :-** पर्यटन से संबंधित विस्तृत जानकारी, यात्रा मार्ग, आवास सुविधा और गतिविधियों का विवरण उपलब्ध कराने हेतु विभागीय वेबसाइट और ऑनलाइन पोर्टल विकसित किए जाते हैं।
- 9. सोशल मीडिया आधारित प्रचार रणनीति :-** फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब तथा अन्य डिजिटल प्लेटफार्म पर नियमित पोस्ट, वीडियो और अभियान चलाकर ग्रामीण पर्यटन स्थलों की दृश्यता बढ़ाई जाती है।

निष्कर्ष :-

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन विकास की व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं। राज्य की भौगोलिक विविधता, मरुस्थलीय प्राकृतिक परिदृश्य, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, लोक परंपराएँ, हस्तशिल्प, जनजातीय जीवन शैली तथा धार्मिक आस्था से जुड़े ग्रामीण क्षेत्र पर्यटकों को विशिष्ट अनुभव प्रदान करते हैं। ग्रामीण पर्यटन न केवल स्थानीय संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण में सहायक है, बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने, रोजगार के अवसर बढ़ाने तथा शहरों की ओर हो रहे पलायन को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि राजस्थान के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि अनुभव, सांस्कृतिक पर्यटन, प्राकृतिक पर्यटन, साहसिक गतिविधियाँ, जनजातीय जीवन शैली तथा सामुदायिक आधारित पर्यटन जैसे अनेक आयाम विकसित किए जा सकते हैं। मंडावा, खिचन, खुरी, सामोद, खीमसर जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध संसाधन पर्यटन विकास के लिए अनुकूल आधार प्रदान करते हैं। इन स्थलों का योजनाबद्ध विकास स्थानीय समुदाय की आय में वृद्धि और क्षेत्रीय संतुलित विकास को गति दे सकता है। हालाँकि, ग्रामीण पर्यटन के प्रभावी विकास के लिए आधारभूत सुविधाओं की कमी, जागरूकता का अभाव, प्रशिक्षित मार्गदर्शकों की कमी, प्रचार-प्रसार की सीमित व्यवस्था तथा अवसंरचनात्मक चुनौतियाँ प्रमुख बाधाएँ हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु सड़क, आवास, संचार, स्वच्छता एवं डिजिटल सुविधाओं का विस्तार आवश्यक है। साथ ही स्थानीय युवाओं को पर्यटन प्रबंधन, आतिथ्य व्यवहार एवं मार्गदर्शन का प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी विपणन रणनीतियों, डिजिटल प्रचार-प्रसार, सांस्कृतिक आयोजनों, पर्यटन मेलों तथा सरकारी एवं निजी सहभागिता को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। यदि इन सभी पहलुओं पर

समन्वित प्रयास किए जाएँ तो राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन सतत विकास का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। इससे न केवल राज्य की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होगी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में भी सकारात्मक परिवर्तन संभव होगा।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. शर्मा, एच.एस. एवं शर्मा, एम.एल. (2017), *राजस्थान का भूगोल*, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
2. व्यास, राजेश कुमार (2004), *राजस्थान में पर्यटन प्रबंध*, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
3. बंसल, सुरेशचंद्र (2011), *पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबंधन*, साहित्य सागर प्रकाशन, जयपुर।
4. प्रगति प्रतिवेदन (2015-2016), पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार।
5. आर्थिक समीक्षा (2016-2017), आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर।
6. वर्मा, रश्मि (2017), "भारत में ग्रामीण पर्यटन में संभावनाएं", *कुरुक्षेत्र*, वर्ष 64, अंक 2, दिसम्बर।
7. राय, मधुरा (2017), "ग्रामीण पर्यटन: विकास और विस्तार की ओर", *कुरुक्षेत्र*, वर्ष 64, अंक 2, दिसम्बर।
8. Singh, Surendra Prasad (2017), "कृषि पर्यटन: गांव में पर्यटन का नया आकर्षण", *कुरुक्षेत्र*, वर्ष 64, अंक 2, दिसम्बर।
9. Hosetti, B.B. (2000), *Ecotourism Development and Management*, Pointer Publishers, Jaipur.
10. Khan, M.Y. (2015), *Tourism Geography*, Wisdom Press, New Delhi.
11. Rajasthan Tourism Unit Policy (2015), Department of Tourism, Government of Rajasthan.
12. Sharma, K.C. (1996), *Tourism Policy, Planning and Strategy*, Pointer Publishers, Jaipur.